वानिकी समाचार

(अर्द्धवार्षिक)

भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून

वर्ष – 3 | जुलाई – दिसम्बर 2011 | अंक – 2

प्रथम भारतीय वन कांग्रेस 2011

भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून ने 22 से 25 नवम्बर 2011 तक नई दिल्ली में प्रथम भारतीय वन कांग्रेस 2011 का सफल आयोजन किया। इस वन कांग्रेस 2011 का उद्घाटन सुश्री जयन्ती नटराजन, माननीय पर्यावरण एवं वन मंत्री, नई दिल्ली ने किया। सुश्री जयन्ती नटराजन ने अपने उद्घाटन भाषण में देश में वन प्रबन्धन से सम्बन्धित विषयों के और अधिक वैज्ञानिक विश्लेषण पर जोर दिया। उन्होंने राज्य स्तर पर वन जैवपुंज वृद्धि, अकाष्ठ वन उत्पाद, इको पर्यटन इत्यादि पर विश्वसनीय आँकड़े विकसित करने के लिए कहा। उन्होने विशेषज्ञों से मानव–वन्य जीव संघर्ष के लिए नवप्रवर्तनकारी समाधानों, देश में वन प्रमाणीकरण के विकास तथा वनों से मूर्त तथा अमूर्त लाभों के आकलन के लिए कहा।

राज्यसभा सदस्य डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन

डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन, सदस्य, राज्यसभा ने प्रथम वन कांग्रेस के आयोजन के लिए भा.वा.अ.शि.प. के प्रयासों का स्वागत किया। उन्होने देश के तटीय मैनग्रोवों, पहाड़ियों तथा शुष्क जोनो पर भा.वा.अ.शि.प. द्वारा विशेष अनुसन्धान की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होने कहा कि देश में कृषि वानिकी को प्रोत्साहन देने के लिए कई वन विज्ञान केन्द्रों की आवश्यकता है। उन्होंने भा.वा.अ.शि.प. से खनन क्षेत्रों के पुनर्स्थापन के लिए कहा क्योंकि इन क्षेत्रों को तत्काल मध्यस्थता की आवश्यकता है। उन्होने आगे कहा कि पावन कुंजों के संरक्षण में स्थानीय धरोहर स्थलों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

डॉ. वी.के.बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने कहा कि न केवल वन प्रबन्धन के लिए बल्कि देश में खाद्य तथा जल सुरक्षा के लिए भी वानिकी सैक्टर में भारी निवेश की आवश्यकता है।

सुश्री कायटलीन वायसेन, यू.एन.डी.पी. भारत के कंट्री डायरेक्टर ने कहा कि यू.एन.डी.पी. जैवविविधता संरक्षण तथा वन आधारित आजीविकाओं को मुख्यधारा में लाने के प्रयासों में सहायता कर रहा है। उन्होने कांग्रेस के लिए चयनित विषय क्षेत्रों का स्वागत किया तथा भा.वा.अ.शि.प. को यू.एन.डी.पी. की सहायता का वचन दिया।

महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून माननीय मंत्री जी का स्वागत करते हुए

प्रथम भारतीय वन कांग्रेस 2011 को संबोधित करती माननीय पर्यावरण एवं वन मंत्री, भारत सरकार

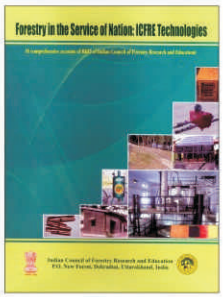

वन कांग्रेस के दौरान माननीय मंत्री महोदया ने भा.वा.अ.शि.प. द्वारा वन कांग्रेस के अवसर पर प्रकाशित पुस्तक "Forestry in the Service of Nation: ICFRE Technologies" का विमोचन किया। यह पुस्तक 100 से अधिक वर्षों के वानिकी अनुसन्धान एवं परिषद् द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों तथा प्रक्रमों, संग्रहालयों तथा वैज्ञानिक सुविधाओं, उपलब्धियों इत्यादि पर सचित्र प्रकाश डालती हैं तथा पर्यावरण संरक्षण के साथ लोक कल्याण के लिए किए जा रहे प्रतिबद्धतापूर्ण कार्यों की झलक देती है। इस अवसर पर माननीय मंत्री महोदया ने दो अन्य पुस्तकों "Voices from the Field" तथा "Status of JFM in India" का भी विमोचन किया। इसके अतिरिक्त वन कांग्रेस के दौरान Extension Strategies in Forestry Research For ICFRE, Agroforestry Research at ICFRE, ICFRE Information Booklet तथा ICFRE Desk Calender 2012 का भी विमोचन किया गया।

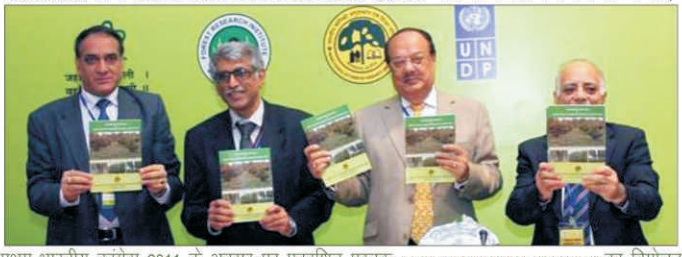

प्रथम भारतीय कांग्रेस 2011 के अवसर पर प्रकाशित पुस्तक "AGROFORESTRY AT ICFRE" का विमोचन

चार दिन चले इस वृहत आयोजन में 50 से अधिक संगठनों के 550 से अधिक सहभागियों ने भाग लिया तथा विभिन्न सत्रों में प्रस्तुतियाँ दीं जिन पर विचार विमर्श किया गया और उत्कृष्ट प्रस्तुतियों को पुरस्कृत किया गया। नई दिल्ली वन चार्टर 2011 के अंगीकरण के साथ प्रथम भारतीय वन कांग्रेस का समापन हुआ।

प्रथम भारतीय वन कांग्रेस 2011 के सहभागी

प्रशिक्षण

सर्वश्री टीयूवी एसयूडी दक्षिण एशिया प्रा.लि. नई दिल्ली की सहायता से 3 से 5 जुलाई 2011 को भा.वा.अ.शि.प., देहरादून में "सीडीएम मान्यीकरण तथा सत्यापन" पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. सहित 20 सहभागियों ने इसमे भाग लिया।

"सीडीएम मान्यीकरण तथा सत्यापन" पर प्रशिक्षण के सहभागी तथा आयोजक

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून द्वारा "वन तथा जलवायु परिवर्तनः अवसर तथा शमन तथा अनुकूलन की चुनौतियाँ" पर दिनांक 17 से 21 अक्टूबर 2011 तक भारतीय वन सेवा अधिकारियों के लिए एक साप्ताहिक अनिवार्य प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित इस पाठ्यक्रम में विभिन्न राज्यों के 33 भा.व.से. अधिकारियों ने सहभागिता की।

भारतीय वन सेवा अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के सहभागी तथा आयोजक

भा.वा.अ.शि.प. देहरादून में 14 से 18 नवम्बर 2011 तक "जलवायु परिवर्तन तथा कार्बन शमन" पर वैज्ञानिकों तथा प्रौद्योगविदों के लिए एक साप्ताहिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। चौबीस वैज्ञानिकों तथा प्रौद्योगविदों ने इस पाठ्यक्रम में सहभागिता की। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित था।

"जलवायु परिवर्तन एवं कार्बन शमन" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम के सहभागी एवं आयोजक

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून द्वारा 23 दिसम्बर 2011 को "रिंगाल की उपयोगिता, प्रवर्धन व संरक्षण" पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन धनोल्टी वन विभाग के परिसर में किया गया। इस कार्यशाला का उद्घाटन श्री अरूण सिंह रावत, समूह समन्वयक, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून द्वारा किया गया। कार्यशाला में उत्तराखण्ड वन पंचायत अध्यक्ष श्री हुकम सिंह, प्रभागीय वन अधिकारी, मसूरी, श्री राम गोपाल, प्रभाग प्रमुख, वनस्पति विभाग, डॉ. सुभाष नौटियाल, वैज्ञानिक–डी, डॉ. सत्य प्रसाद चौकियाल, वैज्ञानिक–ई, डॉ. हर्षवर्धन वशिष्ठ व अनुसन्धान सहायक डॉ. दिगम्बर प्रसाद नौटियाल आदि द्वारा रिंगाल से सम्बन्धित जानकारियों से प्रशिक्षार्थियों को अवगत कराया गया तथा बाँस एवं रिंगाल की प्रवर्धन विधियों का विशेष रूप से प्रदर्शन किया गया।

रिंगाल की खेती पर प्रशिक्षण देते हुए वैज्ञानिक

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बैंगलोर द्वारा 14 से 18 नवम्बर 2011 तक कर्नाटक राज्य वन उद्योग निगम (केएसएफआईसी) के पदाधिकारियों के लिए "उन्नत काष्ठ प्रक्रम एवं प्लान्टेशन टिम्बर का उपयोग" विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में केएसएफआईसी से नौ पदाधिकारियों ने भाग लिया जिसमे से केएसएफआईसी, शिवमोगा से चार एवं केएसएफआईसी, बैंगलोर से पाँच पदाधिकारी थे।

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बैंगलोर द्वारा 15 दिसम्बर 2011 को कर्नाटक वन विभाग के वनक्षेत्रपाल अधिकारियों के लिए "वनवृक्ष प्रजातियों के पृथग्लिंगी भेद पहचान एवं सुवाहय आसवन इकाई" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण संचालित किया गया।

उष्णकटिबंधीय वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर द्वारा वन विभाग के मैदानी अमले और अन्य लाभार्थियों हेतु 18 से 20 अक्टूबर 2011 तक स्लैम परियोजना के अन्तर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

उष्णकटिबंधीय वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर द्वारा महाराष्ट्र राज्य वन विभाग के मैदानी अमले एवं अन्य अधिकारियों हेतु 31 अक्टूबर से 4 नवम्बर 2011 तक वानिकी से सम्बंधित मुद्दों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

"महाराष्ट्र राज्य वन विभाग के अधिकारियों एवं क्षेत्रीय अमले हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम" में भाग लेते सहभागी

शुष्क वन अनुसन्धान संस्थान, जोधपुर द्वारा 19 से 23 दिसम्बर 2011 तक भारतीय वन अधिकारियों का एक साप्ताहिक अनिवार्य प्रशिक्षण "निम्नीकृत रेगीस्तानी पारितंत्र के धारणीय विकास के लिए समेकित उपागम" आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित था।

वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा 25 से 29 अगस्त 2011 तक सतत् आजीविका के लिए बांस का प्रसार, खेती एवं प्रबन्धन पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा 7 से 9 दिसम्बर 2011 तक वैज्ञानिक पद्धति के माध्यम से लाह की खेती पर सिमडेगा जिला, झारखण्ड में तीन दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया, जिसमें सिमडेगा जिले के किसानों ने हिस्सा लिया।

कार्यशाला/संगोष्ठी/बैठक/इत्यादि

भा.वा.अ.शि.प. देहरादून में 12 से 15 दिसम्बर 2011 तक जैवविविधता (सीबीडी) पर संयुक्त राष्ट्रों की चार दिवसीय बैठक आयोजित की गई। उद्घाटन सत्र के दौरान सहभागियों का स्वागत करते हुए डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने कहा कि मानव उत्तरजीविका तथा पारितंत्र प्रक्रियाओं के रखरखाव के लिए जैवविविधता का प्रभावी संरक्षण आवश्यक है। उन्होंने सहभागियों से विकास दृष्टिकोण तथा क्रियाकलापों को प्रोत्साहित करने के लिए कहा जो कि जैवविविधता का संरक्षण तथा धारणीय उपयोग करें।

डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. सी.बी.डी. विशेषज्ञ समूह को संबोधित करते हुए

मुख्य अतिथि डॉ. आर.बी.एस. रावत, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, उत्तराखण्ड राज्य वन विभाग ने उद्घाटन समारोह के दौरान जोर देकर कहा कि जैवविविधता तथा गरीबी उन्मूलन आन्तरिक रूप से जुड़े हुए हैं तथा विकास प्रक्रियाओं में समेकित प्रयासों की माँग करते हैं।

श्री हेम पांडे, संयुक्त सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार ने जैवविविधता को विकास प्रक्रिया के एक अभिन्न अंग के रूप में सम्मिलित करने के लिए भारत सरकार की प्रतिबद्धताओं के बारे में बताया।

श्री रवि शर्मा, प्रधान अधिकारी तथा सीबीडी सचिवालय के प्रतिनिधि ने कहा कि सीबीडी आजीविका आवश्यकताओं पर जोर देते हुए गरीबी उन्मूलन तथा विभिन्न विकासीय क्रियाकलापों को समेकित करते हुए जैवविविधता संरक्षण के लिए और अधिक सक्रिय रणनीतियाँ विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

बैठक की समन्वयक डॉ. रेणु सिंह, प्रमुख, जैवविविधता एवं जलवायु परिवर्तन प्रभाग ने जानकारी दी कि यह बैठक महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय बैठकों में से एक है जिसके परिणाम सीबीडी की पार्टियों की ग्यारहवी कान्फ्रेन्स (सीओपी–11) में दिये जायेगे जिसकी भारत द्वारा 2012 में हैदराबाद में मेजबानी की जायेगी। विशेषज्ञ समूह गरीबी उन्मूलन तथा विकास के लिए जैवविविधता तथा पारितंत्र सेवाओं को मुख्यधारा में लाने के लिए मौजूदा तंत्रों का विश्लेषण करने के लिए अध्यादेशित थे। सीबीडी विशेषज्ञ समूह बैठक में 17 सीबीडी देश पार्टियों के विशेषज्ञ समूह संयुक्त राष्ट्रों तथा विशेषज्ञ एजेंसियों के 2 प्रतिनिधिः 7 अन्तर सरकारी संस्थाएँ; 9 गैरसरकारी संस्थाएँः तथा देशज तथा समुदाय संस्थाओं, विश्वविद्यालयों तथा प्रेक्षकों से 3 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून द्वारा 2 सितम्बर 2011 को एक दिवसीय विचार मंथन सत्र "वन एवं कृषि का अभिसरण" विषय पर आयोजित किया गया। जिसका उदघाटन मुख्य अतिथि डॉ. जे. एस सामरा, मुख्य कार्यकारी, राष्ट्रीय वर्षा सिंचित क्षेत्र प्राधिकरण, नई दिल्ली तथा डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक,

वन एवं कृषि का अभिसरण पर विचार मंथन कार्यशाला में भाग लेते उच्च अधिकारी

भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून द्वारा किया गया। इस एक दिवसीय विचार मंथन सत्र में डॉ. एस.एस. नेगी, निदेशक, वन अनुसन्धान संस्थान, डॉ. जयवीर त्यागी, राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की, डॉ. राकेश शाह, उत्तराखण्ड वन विभाग तथा भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्/वन अनुसन्धान संस्थान के वरिष्ठ वन अधिकारियों एवं वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

वन अनुसन्धान संस्थान द्वारा जलवायु परिवर्तन अध्ययन को व्यापक बनाने हेतु जलवायु परिवर्तन पर एक अखिल भारतीय समायोजन परियोजना भी प्रारंभ की गई। डा0 एस.एस.नेगी, निदेशक, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून को राष्ट्रीय कार्यक्रम समन्वयक के रूप में तथा श्री एम.पी.सिंह, प्रमुख, जलवायु परिवर्तन एवं वन प्रभाव प्रभाग को राष्ट्रीय परियोजना निदेशक के रूप में नामित किया गया है।

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून द्वारा 24 और 25 अक्टूबर 2011 को जलवायु परिवर्तन में वानिकी शोध में रिक्तता की जांच हेतु एक मंच प्रदान करने के लिए "हिमालय में जलवायु परिवर्तन एवं वानिकी शोध आवश्यकता" पर आधारित दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला की अध्यक्षता डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद द्वारा की गई। निदेशक वन अनुसन्धान संस्थान, डॉ. एस. एस. नेगी

हिमालय में जलवायु परिवर्तन और वानिकी अनुसन्धान आवश्यकताएं विषय पर कार्यशाला

ने जलवायु परिवर्तन संबंधी मुद्दों पर प्रकाश डाला। भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलोर से प्रो0 एन. एच. रविन्द्रनाथ एवं डॉ. इंदु मूर्ति ने शोध की स्थिति प्रस्तुत की एवं जलवायु परिवर्तन (पी.एफ.सी.सी) पर आधारित एकीकृत बहुअनुशासनिक कार्यक्रम की आवश्यकता जताई।

हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला ने "अन्तर्राष्ट्रीय वानिकी वर्ष–2011" के संदर्भ में "महत्वपूर्ण औषधीय पौधों के संरक्षण एवं खेती" विषय पर 27 जुलाई 2011 को वन मण्डलाधिकारी, केलॉंग में एक कार्यशाला आयोजित की, जिसमें लगभग 50 किसानों, क्षेत्रीय कर्मचारियों व अन्य लोगों को प्रशिक्षण दिया गया।

कार्यशाला में भाग लेते किसान तथा क्षेत्रीय कर्मचारी

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा प्रायोजित सुगमता तथा आधार सामग्री संग्रह कार्यप्रणाली को अंतिम रूप देने हेतु 18 जुलाई 2011को वन अनुसन्धान संस्थान द्वारा पर्यावरण भवन, नई दिल्ली में प्राथमिक संग्रहकर्ताओं के लिए आश्वस्त उचित आर्थिक प्रतिफल (फेअर इकॉनॉमिकल रिटर्न) हेतु अकाष्ठ वन उपज के वाणिज्यिक उत्पाद पर एक दिवसीय राष्ट्रीय परामर्शी कार्यशाला आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता श्री ए.के.बंसल, सहायक महानिदेशक (एफ.सी) ने की। कार्यशाला में देश के विभिन्न राज्यों से कुल 26 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बैंगलोर द्वारा 8 जुलाई 2011 को गोवा में पणधारियों की बैठक आयोजित की गयी जिसमे 15 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बैंगलोर द्वारा 5 जुलाई 2011 को पणधारियों की बैठक आयोजित की गयी जिसमें विभिन्न संगठनों से 20 प्रतिनिधियों ने भाग लिया एवं अपने सुझाव दिये। बैठक में श्री ए. के. वर्मा, पीसीसीएफ तथा प्रबन्ध निदेशक, के.एस.एफ.आई.सी. मुख्य अथिति के रूप में तथा श्री जी.एस.प्रभू, प्रबन्ध निदेशक, कर्नाटक राज्य, जैव ईंधन विकास बोर्ड सम्मानित अथिति के रूप में उपस्थित रहे।

उष्णकटिबंधीय वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर में 7 और 8 अक्टूबर 2011 को आयोजित स्थानीय बैठक "ग्रीन इंडिया मिशन" में क्षेत्रीय बैठक आयोजित की गई। श्री. पी. जे. दिलीप कुमार, महानिदेशक वन एवं विशेष सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार ने बैठक में भाग लिया।

उष्णकटिबंधीय वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर द्वारा 5 नवम्बर 2011 को हितग्राही सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन में श्री राकेश सिंह, सांसद, जबलपुर ने भाग लिया तथा बारह और जामतारा– परसवारा गांव के हितग्राहियों को चेक वितरित किये।

हितग्राहियों को चेक वितरित करते हुए
श्री राकेश सिंह, सांसद, जबलपुर

अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं/बैठकों में परिषद् की भागीदारी

डॉ. पी.जे. दिलीप कुमार, महानिदेशक वन तथा विशेष सचिव, भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली, डॉ. वी.के.बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. देहरादून, श्री एम. एस. गर्ब्याल, उप महानिदेशक (प्रशासन), भा.वा.अ.शि.प. देहरादून, डॉ. एस.एस.नेगी, निदेशक, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून, श्री संदीप त्रिपाठी, निदेशक (पी एण्ड आई सी), भा.व.अ.शि.प., देहरादून श्री ए.एम. सिंह, डीआईजी (सीयू), भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली तथा भा.वा.अ.शि.प. के अधिकारियों एवं वैज्ञानिकों के दल, ने दिनांक 4 से 9 सितम्बर 2011 तक एडिनबर्ग, यूके में वन भू–पुनरुद्धार के अनुभव से सीखी गई पद्धतियों को आपस में बाँटने के लिए तथा यूके भारत भू–पुनरुद्धार (एफएलआर) परियोजना के अधीन यूके दल के साथ वर्तमान तथा परियोजना के दूसरे फेज के लिए भाग लिया।

डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प्, देहरादून ने दिनांक 19 से 23 जुलाई 2011 तक नेपाल में आईसीआईएमओडी का REDD+ संबंधित कार्यों का निरीक्षण करने के लिए दौरा किया।

महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. नेपाल में

डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प्, देहरादून ने दिनांक 11 से 12 अगस्त 2011 तक भूटान में सार्क वानिकी केन्द्र की शासक मण्डल की पाँचवी बैठक में भाग लिया।

डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून, डॉ. वी.आर.आर. सिंह, प्रमुख, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून, श्री पी. के. कौशिक, वैज्ञानिक–डी, वर्षा वन अनुसन्धान संस्थान, जोरहाट तथा श्री टी.पी. रघुनाथ, समूह समन्वयक (अनुसन्धान), वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान कोयम्बटूर, डॉ. एच. एस. गिनवाल, वैज्ञानिक–ई, व.अ.सं., देहरादून ने 07 से 11 नवम्बर 2011 तक चीन में दूसरे एशिया पैसेफिक सप्ताह में सहभागिता की।

भा.वा.अ.शि.प. दल बीजिंग में

डॉ. एन. कृष्णकुमार, निदेशक, डॉ. बी. गुरूदेव सिंह, वैज्ञानिक–एफ तथा डॉ. ए. निकोडीमस, वैज्ञानिक–ई, वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर ने 11 से 17 सितम्बर 2011 तक वियतनाम में हाल ही में हुए आनुवंशिक सुधार प्राप्ति पर अध्ययन के लिए तथा वियतनाम के वन विज्ञान संस्थान के वैज्ञानिकों के साथ विचार विमर्श के लिए दौरा किया।

डॉ. एस.एस. नेगी, निदेशक, डॉ. एन.एस.के. हर्ष, वैज्ञानिक–एफ तथा डॉ. सुभाष नौटियाल, वैज्ञानिक–एफ, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून, ने 27 से 30 अक्टूबर 2011 तक कम्बोडिया में ता प्रोम मन्दिर में स्थानीय पणधारियों की सक्रिय सहभागिता के साथ वृक्ष परिरक्षण तथा संरक्षण उपचार पर परामर्शी परियोजना के अधीन दौरा किया।

डॉ. एस.एस. नेगी, निदेशक, डॉ. एन.एस.के. हर्ष, वैज्ञानिक–एफ, डॉ. सुभाष नौटियाल, वैज्ञानिक–एफ, डॉ. एम. के. गुप्ता, प्रभाग प्रमुख, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने 31 अक्टूबर से 4 नवम्बर 2011 तक लाओस में बिरला लाओ पल्प प्लांटेशन कम्पनी लिमिटेड को रोपण कार्यक्रम में तकनीकी सहायता देने के लिए दौरा किया।

श्री मोहिन्द्र पाल, निदेशक, हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला, श्री प्रमोद पंत, सहायक महानिदेशक (प्रशासन) तथा श्री. आर.पी. सिंह, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं प्रकाशन प्रभाग), भा.वा.अ.शि.प. देहरादून ने 31 अक्टूबर 2011 को नेपाल में पहाड़ी पारितंत्रों पर कार्य करने वाले संस्थानों/संस्थाओं के प्रमुखों के एक दिवसीय सम्मेलन में भाग लिया।

डॉ. एस.एस. नेगी, निदेशक, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने 1 से 7 दिसम्बर 2011 तक दक्षिण अफ्रीका में जार्ज अगस्त विश्वविद्यालय, गोटिनगन, जर्मनी द्वारा आयोजित जलवायु परिवर्तन में अनुसन्धान तथा राजतंत्र–जटिल अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में वन प्रबन्धन तथा संरक्षण की भूमिका पर अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

डॉ. एन.के. वासु, निदेशक, वर्षा वन अनुसन्धान संस्थान, जोरहाट ने 26 अक्टूबर से 1 नवम्बर 2011 तक चीन में चीन तथा अन्य विकासशील देशों के बीच वानिकी (बाँस) सहयोग को सशक्त बनाने के लिए सेमीनार में भाग लिया।

डॉ. एन.के. वासु, निदेशक, वर्षा वन अनुसन्धान संस्थान, जोरहाट ने 22 से 24 नवम्बर 2011 तक इंडोनेशिया में अगर वुड पर एशिया क्षेत्रीय कार्यशाला, जंगली तथा रोपण स्रोत अगर वुड के प्रबन्धन में भाग लिया।

श्री सुधांशु गुप्ता, सचिव, तथा श्री. पंकज अग्रवाल, सहायक महानिदेशक (प. सं.) भा.वा.अ.शि.प. देहरादून ने 31 अक्टूबर से 11 नवम्बर 2011 तक पेरू में वन प्रमाणीकरण पर अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे भाग में सहभागिता की।

डॉ. बी.एन. मोहन्ती, समूह समन्वयक (अनुसन्धान), काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बैंगलोर ने 21 से 25 अगस्त 2011 तक मैक्सिको में पारिस्थितकीय पुनरूद्धार पर एसईआर 2011 वर्ल्ड कांग्रेस में भाग लेने के लिए तथा प्रकृति तथा संस्कृति के बीच सम्बंध स्थापित करने के लिए भाग लिया।

श्री वी.आर.एस. रावत, वैज्ञानिक–ई, भा.वा.अ.शि.प., देहरदून ने यूएनएफसीसीसी पार्टियों के सम्मेलन (सीओपी) के 17 वें सत्र में तथा क्योटो प्रोटोकाल (सीओपी/एमओपी) 7 के लिए पार्टियों की बैठक में 28 नवम्बर से 9 दिसम्बर 2011 तक डरबन, दक्षिण अफ्रीका में भारतीय प्रतिनिधि मण्डल के एक सदस्य के रूप में भाग लिया।

डॉ. विनीत कुमार, वैज्ञानिक–ई, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने 05 से 08 दिसम्बर 2011 तक इंडोनेशिया में "एशिया पैसेफिक के लिए वानिकी में पारितंत्र आधारित प्रबन्धन तथा जैवविविधता संरक्षण" पर जीएएफ और एन अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी–कम–कार्यशाला में भाग लिया।

डॉ. अरूण प्रताप सिंह, वैज्ञानिक–ई, वर्षा वन अनुसन्धान संस्थान, जोरहाट ने 06 से 09 दिसम्बर 2011 तक फ्रांस में यूरोपियन तथा मैडीटेरियन पादप रक्षण संस्था ईपीपीओ के विशेषक कार्य समूह की बैठक में भाग लिया।

डॉ. श्याम विश्वनाथ, वैज्ञानिक–ई, काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बैंगलोर ने 5 और 6 सितम्बर 2011 को श्रीलंका में बाँस प्रसंस्करण पर एक सेमीनार में सहभागिता की।

डॉ. राजीव पांडेय, वैज्ञानिक–ई, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून (वर्तमान में पर्यावरण एवं वन मंत्रालय में नियुक्त) ने 19 से 24 नवम्बर 2011 तक ढाका, बंगलादेश, में "मैनग्रोव वनों में कार्बन स्टॉक के मापन तथा आकलन" पर सार्क प्रशिक्षण" कार्यशाला में भाग लिया।

डॉ. मधुमिता दास गुप्ता, वैज्ञानिक–ई, वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर ने 01 नवम्बर 2011 से 31 मई 2012 के दौरान टैक्सास ए तथा एम विश्वविद्यालय, टैक्सास में काष्ठ गुणों के लिए कैन्डीडेट जीन आधारित संयोजक विश्लेषण पर छः माह के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग

- चाइनीज वानिकी अकादमी का एक 6 सदस्यीय दल 19 दिसम्बर 2011 को भा.वा.अ.शि.प., देहरादून आया। चाइनीज वानिकी अकादमी तथा भा.वा.अ.शि.प. के बीच वानिकी के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग की संभावनाओं पर विचार–विमर्श हुआ और BRICS सहयोग समझौते के अंतर्गत एक छत्र कार्य योजना के निर्माण का निश्चय किया गया।
- पापुलर और विलो को भारत के लोगों की आजीविका तथा अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान को मान्यता देते हुए और भा.वा.अ.शि.प. द्वारा इस क्षेत्र में पथप्रदर्शक कार्य को देखते हुए खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) और अंतर्राष्ट्रीय पापुलर आयोग (IPC) ने कमीशन के 24वें सत्र और कार्यकारी समिति की 46वीं बैठक देहरादून में अक्टूबर 2012 में करने की सहमति दी है। भारत में आई पी सी का इस प्रकार का यह पहला आयोजन होगा।

अनुसन्धान अधिदेश उपलब्धि हेतु उपाय

जलवायु परिवर्तन पर अखिल भारतीय समायोजन अनुसन्धान कार्य के अंतर्गत एक तत्व के रूप में वन जल विज्ञान आधारित अधिदेश की उपलब्धि हेतु शोध क्षेत्र की पहचान एवं उपाय के साधन हेतु डा0 के.डी.शर्मा, तकनीकी विशेषज्ञ, राष्ट्रीय रेन फेड क्षेत्र प्राधिकारी, योजना आयोग, भारत सरकार की अध्यक्षता में महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. द्वारा एक समिति गठित की गई। जलपंढाल के जल संतुलन प्रबंधन में वनों की भूमिका पर चर्चा करने के लिए समिति की अंतिम बैठक 13 अक्टूबर 2011 को की गई। बैठक में वन अनुसन्धान संस्थान (एफ.आर.आई.), देहरादून, केन्द्रीय मृदा एवं जल संरक्षण शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान (सी.एस.डब्ल्यू.सी.आर.पी.), देहरादून एवं राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान (एन.आई एच.), रूड़की के वैज्ञानिकों ने उपस्थिति दी।

अनुसन्धान परियोजनाओं का वार्षिक पुनरीक्षण

अनुसन्धान निदेशालय के अधीन अनुश्रवण एवं मूल्यांकन प्रभाग भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों में जारी सभी अनुसन्धान परियोजनाओं की वार्षिक समीक्षा तथा मूल्यांकन करता है। अवधि के दौरान भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों की 426 (337 भा.वा.अ.शि.प. निधियीत तथा 89 बाहय सहायता प्राप्त) जारी तथा पूर्ण अनुसन्धान परियोजनाओं की समीक्षा की गई।

अनुसन्धान सलाहकार समूह की बैठक (आरएजी)

भा.वा.अ.शि.प. के संस्थान सितम्बर से दिसम्बर माह तक प्रतिवर्ष संस्थान स्तर पर अनुसन्धान सलाहकार समूह (आरएजी) की बैठकों का आयोजन करते रहे हैं। संस्थानों की अनुसन्धान सलाहकार समूह के संगठन को इस वर्ष संशोधित किया गया है तथा इस वर्ष से इसकी अध्यक्षता सम्बन्धित संस्थान के निदेशक करेंगे। अन्त उपभोक्ताओं की अनुसन्धान आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनुसन्धान सलाहकार समूहों में राज्यों के प्रधान मुख्य वन संरक्षक, विभिन्न स्तर के वैज्ञानिक, वन अधिकारी, विभिन्न पणधारी जैसे गैर सरकारी संगठन, उद्योग, प्रगतिशील किसान प्रतिनिधित्व करते है।

अनुसन्धान योजना प्रभाग ने संस्थान स्तर पर अनुसन्धान सलाहकार समूह (आरएजी) की बैठक वन उत्पादकता संस्थान, रांची में दिनांक 19 और 20 सितम्बर 2011, वन अनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर में 3 और 4 अक्टूबर 2011,उष्णकटिबंधीय वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर में 12 और 13 अक्टूबर 2011, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून में 17 और 18 नवम्बर 2011, वर्षा वन अनुसन्धान संस्थान, जोरहाट में 8 और 9 नवम्बर 2011, शुष्क वन अनुसन्धान संस्थान, जोधपुर में दिनांक 3 और 4 नवम्बर 2011, काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बैंगलोर में 8 और 9 नवम्बर 2011 तथा हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला में 17 और 18 नवम्बर 2011 के दौरान आयोजित की।

वैरायटी रिलीजिंग कमेटी (वै.रि.क)

वैरायटी रिलीजिंग कमेटी (वै.रि.क) की दूसरी बैठक *(1) डैल्बर्जिया सिस्सू राक्बस.* (एफआरआई–डीएस–14) तथा *(2) यूकेलिप्टस हाइब्रीड* (एफआरआई–ईएच–001) के विमोचन के लिए 15 सितम्बर 2011 को पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली में महानिदेशक वन एवं विशेष सचिव (डीजीएफ तथा एसएस) भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

सूचना प्रौद्योगिकी उपक्रम

सूचना प्रौद्योगिकी प्रभाग, भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद् मुख्यालय एवं इसके अधीनस्थ संस्थानों को सूचना प्रौद्योगिकी सेवाएं प्रदान करता है। इन सेवाओं का विस्तार करने एवं इनको सुचारू रूप से प्रयोगकर्त्ताओं तक पहुँचाने की दिशा में आरम्भ की गई कुछ महत्वपूर्ण परियोजनाएँ निम्नवत हैं–

भारतीय वानिकी अनुसन्धान सूचना प्रणाली (IFRIS) उच्च स्तर पर अधिकारियों व कर्मचारियों को प्रदान की जाने वाली सेवा प्रतिपादन के तरीकों का रूपांतरण करने का साफ्टवेयर है। यह साफ्टवेयर वर्तमान दस्ती कार्यप्रणाली को कम्पयूटर के माध्यम से स्वचालित प्रणाली में अनुवादित कर क्रियाशीलता, पारदर्शिता, उत्तरदायित्व, ज्ञान प्रबन्धन, अनुसन्धान परियोजनाओं के सूचना प्रबन्धन को व्यवस्थित कर न्यूनतम समय में प्रयोगकर्त्ता एवं अधिकारियों तक तकनीकी सूचना पहुँचाने में मदद करेगा।

परिषद् ने वाईड एरीया नेटवर्क स्थापित कर अपने अधीनस्थ सभी संस्थानों जो देश के अलग–अलग भौगोलिक क्षेत्रों में हैं, बीएसएनएल की मदद से एक एमपीएलएस–वीपीएन स्थापित करा कर इस क्षेत्र में एक अग्रणी स्थान प्राप्त कर लिया है। यह एक केन्द्रीकृत प्रणाली है जिसका परिचालन केन्द्र देहरादून में अवस्थित है और मार्च 2008 से ही क्रियाशील है।

इसी दिशा में और एक कदम बढ़ाते हुए इस प्रभाग ने भारत सरकार की अगुवाई में राष्ट्रीय स्तर पर आरम्भ की गई एनकेएन परियोजना के अंतर्गत

उच्चगति इंटरनेट बैंडविड्थ भा.वा.अ.शि.प. के समस्त संस्थानों में उपलब्ध करा दी है। इस उच्चगति इंटरनेट बैंडविड्थ के माध्यम से भा.वा.अ.शि.प. मुख्यालय एवं सभी संस्थानों के वैज्ञानिक, शोधकर्ता एवं विद्यार्थी दूरस्थ अनुसन्धान एवं शैक्षिक संस्थानों के साथ संपर्क स्थापित कर प्रगामी मानवीय सुधारों के लिए कार्य कर सकते है। इस नयी व्यवस्था को भा.वा.अ.शि.प. में पहले से स्थापित एमपीएलएस–वीपीएन के प्रतिस्थापना के समानुरूप बनाने के लिये काम चल रहा है जिससे लगभग ₹ 60 लाख प्रतिवर्ष की बचत की जा सकेगी।

भारतीय वानिकी अनुसन्धान सूचना प्रणाली को स्थापित करने एवं उसे सुचारू रूप से चलाने के लिए परिषद् ने एक उच्च तकनीकी आंकड़ा केन्द्र (डेटा सेन्टर) की स्थापना कर ली है। इसमे उच्चकोटि के हार्डवेयर एवं साफ्टवेयर का संग्रहण है। यह केन्द्र भारत सरकार के विभिन्न कार्यालयों व मंत्रालयों के बीच एक अनूठा केन्द्र है जिसमें सूचना तंत्र प्रणाली को द्रुतगति से तथा विभिन्न स्थानों पर कार्यान्वित करने की अद्भुत क्षमता है। इसकी उत्कृष्ट निर्माणशैली के फलस्वरूप इसको आई.एस.ओ. 27001–2005 मानक प्राप्त हुआ है।

परामर्शी सेवाएं

❖ **कर्नाटक के बेल्लारी, चित्रदुर्ग तथा तुमकुर जिले के वृहद स्तर के पर्यावरण प्रबन्धन अध्ययन**

महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. चित्रदुर्ग, कर्नाटक के खनन स्थलों का दौरा करते हुए

- भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने भा.वा.अ.शि.प. को कर्नाटक के बेल्लारी जिले के वृहद पर्यावरण प्रबन्धन अध्ययन करने के लिए निर्देशित किया तथा तीन महीने में इसकी रिर्पोट माननीय सर्वोच्च न्यायालय को सौपने को कहा। इसके अनुसार डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. के नेतृत्व में भा.वा.अ.शि.प. के विशेषज्ञों के एक दल ने 23 अगस्त से 29 अगस्त 2011 तक कर्नाटक में बैंगलोर तथा बेल्लारी जिले का दौरा किया। दौरे के दौरान डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक के नेतृत्व में दल ने राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों, खनन क्रियाकलापों में सम्मलित सभी मुख्य पणधारियों से बातचीत की तथा दल ने पूरे जिले के खनन क्षेत्रों का खदान मालिकों/प्रतिनिधियों की उपस्थिति में पूरा दौरा किया। दल ने पर्यावरण विशेषकर वनों, वन्यजीव तथा मानव पर्यावरण पर खनन क्रियाकलापों के प्रभावों पर एक समीक्षा की तथा तय समय सीमा में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।

  माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने अपना आदेश तुमकुर तथा चित्रदुर्ग जिलों के लिए बढ़ा दिया तथा भा.वा.अ.शि.प. को आदेशित किया कि बेल्लारी के अतिरिक्त वे इन दोनों का वृहद स्तरीय पर्यावरण प्रबन्धन अध्ययन करे। परिषद् ने अध्ययन पूरा कर दिया है।

❖ **हिमालचल प्रदेश पावर कारपोरेशन लि. ने भा.वा.अ.शि.प. को निम्नलिखित अध्ययन प्रदान किये।**

- जिस्पा जल विद्युत परियोजना के लिए वृहद पर्यावरण समाघात अध्ययन (300 मैगावाट)
- बेरी निचली जल विद्युत परियोजना (78 मैगावाट) के लिए वृहद पर्यावरण समाघात।
- थाना प्लॉन जलविद्युत परियोजना के लिए वृहद पर्यावरण समाघात अध्ययन (141 मैगावाट)
- सुरगनी सुण्डला जल विद्युत परियोजना (42 मैगावाट) के लिए वृहद पर्यावरण प्रबन्धन अध्ययन।

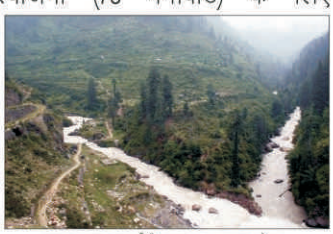

नाकथान एचईपी का अध्ययन क्षेत्र

- तोष–पार्वती (नाकथान) के लिए वृहद पर्यावरण समाघात अध्ययन।

जलीय वनस्पति व प्राणी तथा सामाजिक परिवेश पर आधाररेखा आंकड़ा एकत्रीकरण के लिए विशेषज्ञों के एक दल ने परियोजना स्थलों का दौरा किया।

❖ **हाइड्रो डवलेपमेंट कारपोरेशन भारत, लि.** ने पश्चिमी भूटान के चुखा जोंगखाग, टिहरी में बुनाखा जलाशय योजना तथा संकोश जल विद्युत परियोजना के वृहद पर्यावरण समाघात अध्ययन का कार्य भा.वा.अ.शि.प. देहरादून को प्रदान किये।

  सभी परामर्शी योजनाओं के लिए वृहद अध्ययन जैविक, भौतिक तथा सामाजिक पर्यावरण पर आधारित आधार रेखा आंकडा एकत्रीकरण के लिए बसंत, गर्मी, पतझड़ तथा शरद ऋतु 2009–11 में किये गये तथा विस्तृत रिपोर्ट परियोजना प्रस्तावक को प्रस्तुत की गई।

❖ **कुटेहर एच.ई.पी. परियोजना के लिए जलग्रहण क्षेत्र उपचार (सी.ए.टी.) दिये गये**

  कुटेहर एच.ई. परियोजना को परिषद के EIA अध्ययन के आधार पर पर्यावरणीय क्लियरेंस मिलने के उपरान्त जिंदल दक्षिण पश्चिमी ऊर्जा लिमिटेड ने कुटेहर एच.ई.पी. परियोजना स्थल के विस्तृत सी.ए.टी. प्लान संविन्यास के लिए एक अध्ययन परिषद को प्रदान किया। अध्ययन 2011 में किया गया तथा परियोजना के लिए विस्तृत जलसंभरण क्षेत्र उपचार योजना परियोजना प्रस्तावक को प्रस्तुत की गई।

❖ वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून को उत्तराखण्ड सरकार की ओर से यूकेएफसी वन भूदृश्य पर एक परामर्शी सेवा प्रदान की गई है।

अनुदान

भा.वा.अ.शि.प. देश में वानिकी शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए ढ़ाँचे को मजबूत करने के लिए विश्वविद्यालयों के अधीन विभिन्न वानिकी विश्वविद्यालयों/संस्थानों को अनुदान दे रहा है जो पूर्व स्नातक तथा स्नात्कोतर पाठ्यक्रम चला रहे है। जुलाई से दिसम्बर 2011 के दौरान 10 विश्वविद्यालयों को अनुदान के रूप में ₹ 100.00 लाख अनुमोदित किये गये।

भा.वा.अ.शि.प. प्रत्यायन बोर्ड

भा.वा.अ.शि.प. ने "पाठ्यक्रम कार्यक्रम का प्रत्यायन" कार्यक्रम के अधीन विश्वविद्यालयों द्वारा चलाये जा रहे वानिकी पाठ्यक्रमों के समीक्षा मूल्यांकन का कार्य हाथ में लिया है। भा.वा.अ.शि.प. प्रत्यायन बोर्ड की बैठक 13 अक्टूबर 2011 को हुई तथा 09 विश्वविद्यालयों का प्रत्यायन अनुमोदित किया गया।

नीति अनुसन्धान अध्ययन

- नीति अनुसन्धान समिति की 5वीं बैठक पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली में 10 अगस्त 2011 को आयोजित की गई।
- "उन्नत आजीविका तथा धारणीय वन प्रबन्धन को सुनिश्चित करने के लिए अनुसूचित जाति तथा अन्य पारम्परिक वन वासियों अधिनियम 2006 (वन अधिकारों की पहचान) के कार्यान्वयन के लिए विभिन्न संस्थानों में सहक्रिया" पर प्रारूप प्रतिवेदन का मूल्यांकन करने के लिए भा.वा.अ.शि.प. की मूल्यांकन समिति की बैठक 30 सितम्बर 2011 को तथा 3 अक्टूबर 2011 को परिषद् में आयोजित की गई।

नागरिक चार्टर

नागरिक/सेवोत्तम चार्टर की तैयारी के लिए दिनांक 13 जुलाई 2011 तदुपरान्त अंतिम रूप देने के लिए 17 अगस्त 2011 को उप महानिदेशक (शिक्षा) के कक्ष में एक बैठक आयोजित की गई।

मानव संसाधन विकास समिति बैठक

भा.वा.अ.शि.प. के लिए मानव संसाधन विकास नीति का संविन्यास करने के लिए भा.वा.अ.शि.प. के प्रमण्डल कक्ष में 21 सितम्बर 2011 को भा.वा.अ.शि.प. समिति की बैठक आयोजित की गई। समिति की दूसरी बैठक 27 दिसम्बर 2011 को आयोजित की गई तथा विस्तृत अनुसंशाओं को अंतिम रूप प्रदान किया गया।

राजभाषा

भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून द्वारा 14 से 20 सितम्बर 2011 तक हिन्दी सप्ताह समारोह 2011 आयोजित किया गया। इस समारोह के दौरान 14 सितम्बर 2011 को वाद–विवाद प्रतियोगिता, दिनांक 16 सितम्बर 2011 को निबंध प्रतियोगिता, दिनांक 19 सितम्बर को टिप्पणी प्रतियोगिता तथा दिनांक 20 सितम्बर 2011 को स्वरचित काव्यपाठ एवं समापन समारोह का आयोजन किया गया। समापन समारोह में डॉ. राम प्रसाद, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (सेवानिवृत्त), मध्य प्रदेश, मुख्य अतिथि के रूप में, श्री विनय लूथरा, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, कर्नाटक विशिष्ट अतिथि के रूप में तथा डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प.,देहरादून उपस्थिति थे।

डॉ. वी. के. बहुगुणा, हिन्दी समापन समारोह में विचार व्यक्त करते हुए

वर्षा वन अनुसन्धान संस्थान, जोरहाट में 8 से 14 सितम्बर 2011 को हिन्दी सप्ताह एवं हिन्दी दिवस आयोजित किया गया। इस समारोह में श्रुतलेखन, निबन्ध लेखन, सामान्य ज्ञान, स्लोगन आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित सभा में संस्थान के निदेशक डॉ. एन. के. वासु, समूह समन्वयक (अनुसन्धान) श्रीमती एम्तिएन्ला आओ, सभी वैज्ञानिक, कर्मचारी तथा शोध कार्यों से जुड़े व्यक्ति उपस्थित थे।

हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला द्वारा 14 सितम्बर 2011 को "हिन्दी दिवस" समारोह मनाया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिन्दी को सम्मान देना तथा हिन्दी भाषा के प्रति जागरूकता लाना था। समारोह की अध्यक्षता डॉ. के. एस. कपूर, समूह समन्वयक (अनुसंधान) ने की तथा इस मौके पर संस्थान के सभी वैज्ञानिक, अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

वर्षा वन अनुसन्धान संस्थान, जोरहाट में 22 दिसम्बर 2011 को एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में उत्तर–पूर्व विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान, जोरहाट के हिन्दी अधिकारी श्री अजयकुमार उपस्थित थे।

वन विज्ञान केन्द्र/प्रदर्शन ग्राम

हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला द्वारा 25 सितम्बर 2011 को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन आदर्श गावं, लाणा बाका, सिरमौर में किया गया, जिसमें 40 किसानों व स्थानीय ग्रामवासियों ने भाग लिया।

सालावास ग्राम पंचायत तथा राज्य वन विभाग, जोधपुर की सहभागिता से प्रदर्शन ग्राम, सालावास, जोधपुर में 28 जुलाई 2011 को वन महोत्सव 2011 मनाया गया। श्री मलखान सिंह बिशनोइ, एम.एल.ए. लूनी कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे।

वन विज्ञान केन्द्र के अन्तर्गत एक प्रशिक्षण सिंह सदन, सासनगिर, जूनागढ़ (गुजरात) में 17 से 19 अक्टूबर 2011 तक आयोजित किया गया जिसमें 65 सहभागियों (30 वन कर्मी तथा 35 किसानों) ने सहभागिता की।

किसान भवन, श्री गंगानगर (राजस्थान) में 14 से 16 नवम्बर 2011 को तीन दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। कुल 67 सहभागियों (15 वन कर्मियों तथा 16 किसानों) ने प्रशिक्षण में भाग लिया।

पुरस्कार

वैज्ञानिक और एप्लाइड रिसर्च (एसएआरसी) केन्द्र, मेरठ (उत्तर प्रदेश) द्वारा 14 सितम्बर 2011 को श्री हरि ओम सक्सेना, वैज्ञानिक–बी, उष्णकटिबंधीय वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर को "एसएआरसी स्वर्ण पदक पुरस्कार" से सम्मानित किया गया।

सुश्री शिप्रा नागर, पी.एच.डी स्कालर, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून के शोध "टिनोस्पोरा सिनेनसिस पॉलीसेक्राइड के ढाँचागत अध्ययन" तथा श्री परवीन उनियाल आर.ए.I., वन अनुसन्धान संस्थान को शोधपत्र "टैगेटीज मिनुटा तथा टर्मीनेलिया चीबुला का प्राकृतिक डाई के स्रोत के रुप में उपयोग" के लिए 14 से 16 नवम्बर 2011 तक आयोजित छठे यूकास्ट कांग्रेस 2011 के दौरान सर्वोत्तम मौखिक प्रस्तुतिकरण के लिए युवा वैज्ञानिक पुरस्कार दिया गया।

डॉ. वाई.सी. त्रिपाठी तथा सुश्री शिप्रा नागर को विषय "हर्बल औषधियों की गुणवत्ता सुरक्षा तथा क्षमता–पादप रसायन उपागम" पर "पादप रसायन तथा आर्युर्वेदः सामर्थ्य तथा संभावना" पर 24 दिसम्बर 2011 को देहरादून में आयोजित 10वीं संगोष्ठी में मौखिक प्रस्तुतिकरण पर प्रथम पुरस्कार दिया गया तथा सुश्री शिप्रा नागर, सुश्री मनीषा रीधू, डॉ. वाई. सी. त्रिपाठी तथा श्री लोकेश उपाध्याय को संगोष्ठी में विषय "आधुनिक मधुमेहरोधी औषधियों की खोजः आयुर्वेद ने रास्ता दिखाया" पर सर्वोत्तम पोस्टर प्रस्तुतिकरण के लिए प्रथम पुरस्कार दिया गया।

सुश्री शिप्रा नागर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार ग्रहण करती हुई

नये उपक्रम

- वानिकी तथा राष्ट्रीय स्तर पर वानिकी अनुसन्धान के बीच की रिक्तता को भरने के लिए तथा नये विचारों को सृजित करने के लिए सारे देश से प्रख्यात वैज्ञानिकों/अधिकारियों का गठन कर भा.वा.अ.शि.प. में एक **थिंक टैंक** का गठन किया गया।
- विभिन्न विषयों के व्यवस्थित उपागम तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा धारणीय प्रबन्धन के साथ अनुसन्धानों को जोड़ने तथा लोगों के लाभ के लिए भा.वा.अ.शि.प. ने अनुसन्धान, शिक्षा तथा विस्तार के अधीन छः प्रमुखता वाले क्षेत्र तथा 43 विषय अभिज्ञात किये हैं।
- प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन में नयी चुनौतियों का सामना करने तथा वृहद निवेश तथा प्राप्ति के लिए प्रत्येक प्रमुखता वाले क्षेत्र के लिए एक **राष्ट्रीय परियोजना निदेशक (NPD)** नियुक्त किया गया है।
- स्थल विशिष्ट अनुसन्धान कार्यक्रम विकसित करने के लिए तथा विभिन्न विषयों पर व्यवस्थित उपागम नियुक्त करने के लिए **राष्ट्रीय विषय वस्तु समन्वयक (NSMC)** नामित किये गये।
- पारम्परिक पणधारियों के विचारों/आवश्यकता प्रेरित अनुसन्धान विचारों पर सोचने तथा वानिकी विज्ञान की उभरती हुई चुनौतियों का सामना करने के लिए भा.वा.अ.शि.प. के वैज्ञानिकों का एक **जिंजर ग्रुप** बनाया गया।
- समाज की आवश्यकताओं की ओर वानिकी विज्ञान/अनुसन्धान कार्यकताओं को उन्मुख करने के लिए तथा वैज्ञानिकों, अनुसन्धान कार्यकर्ताओं तथा पणधारियों के बीच संवाद को सुधारने के लिए वन अधिकारियों का एक **फोरम** बनाया गया।

डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून का भा.वा.अ.शि.प. के संस्थानों का निरीक्षण

डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला तथा इसके विभिन्न क्षेत्रों में स्थित क्षेत्रीय अनुसन्धान केन्द्रों का 03 से 10 दिसम्बर 2011 तक दौरा किया। इस दौरान महानिदेशक महोदय ने संस्थान के अन्तर्गत चलाई जा रही प्लान तथा बाह्य परियोजनाओं एवं प्रदर्शन पौध रोपण क्षेत्रों को देखा व उनके बारे में अपने सुझाव दिये।डॉ. बहुगुणा ने अपने प्रवास के दौरान हिमाचल प्रदेश वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ विभिन्न मुद्दों विशेषकर वानिकी से सम्बन्धित मुद्दों पर विचार–विमर्श किया।

डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. क्षेत्र कार्य तथा प्रदर्श रोपण का निरीक्षण करते हुए

डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., हि.व.अ.सं., शिमला में

इसी दौरान डॉ. वी.के. बहुगुणा ने प्रदेश के पवित्र एवं राज्य पौधे देवदार का संस्थान के प्रांगण में पौधरोपण किया तथा इसके प्रचार, प्रसार व संरक्षण पर बल हेतु अपनी इच्छा व्यक्त की।

डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. देवदार का रोपण करते हुए

अपने इस भ्रमण के दौरान महानिदेशक महोदय ने संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाओं का भी निरीक्षण किया तथा इनमें वैज्ञानिकों द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की।

डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. क्षेत्र कार्य तथा प्रदर्श रोपण का निरीक्षण करते हुए

डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने "एम.डी. चतुर्वेदी स्मारक प्रशिक्षण परिसर" का 05 दिसम्बर 2011 को विधिवत उदघाटन किया। पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि यह प्रशिक्षण परिसर आधुनिक उपकरणों से लैस होगा तथा संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी को लक्षित समूहों, जिसमें राज्य वन विभाग भी शामिल होंगे, को प्रसारित करने का माध्यम होगा। उन्होने बताया कि यह प्रशिक्षण परिसर उभरते वानिकी विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए उपयोगी होगा।

डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने नवनिर्मित एम. डी. चतुर्वेदी मेमोरियल प्रशिक्षण काम्पलेक्स का उद्घाटन किया

डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, ने 29 अगस्त 2011 को काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान का दौरा किया तथा संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित एक पत्रकार सम्मेलन को संबोधित किया।

डॉ. वी.के. बहुगुणा, भा.व.से., महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. देहरादून ने 04 नवम्बर 2011 को वन अनुसन्धान केन्द्र, हैदराबाद का दौरा किया एवं केन्द्र के परियोजना कार्यों की समीक्षा की। वन अनुसन्धान केन्द्र, हैदराबाद दौरे से पहले पूर्वाह्न में महानिदेशक महोदय ने हैदराबाद के अरण्य भवन सम्मेलन कक्ष में आन्ध्र प्रदेश वन विभाग के साथ पारस्परिक बैठक करके राज्य में शुरू वन अनुसन्धान गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त की।

संरक्षक :
डॉ. वी.के.बहुगुणा, महानिदेशक

सम्पादक मण्डल :
श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार)
अध्यक्ष

श्री आर.पी.सिंह, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग)
मानद सम्पादक

श्री रमाकान्त मिश्र, अनुसन्धान अधिकारी (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग)
सदस्य

- "वानिकी समाचार" में प्रकाशित सामग्री सम्पादक मण्डल के विचारों को अनिवार्यतः प्रतिबिंबित नहीं करती है।
- प्रकाशन हेतु सामग्री मानद सम्पादक को प्रेषित की जा सकती है।
- डिजिटल संस्करण **www.icfre.gov.in** पर उपलब्ध है।

प्रेषक:
श्री आर.पी.सिंह
सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार)
विस्तार निदेशालय, भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248 006
ई–मेल : **adg_mp@icfre.org**
दूरभाष : 0135–2755221, फैक्स : 0135–2750693

मुद्रक: एक्स्ट्रीम प्रिन्ट आईडियाज़, देहरादून। फोन: 09311156526, 8958400555